सारिका भूषण

राँची, झारखण्ड

शोर में ख़ामोशी

मेरे चारों ओर
शोर ही शोर है
मैं सैंकड़ों आदमियों के बीच
हूँ
स्टाइल और ग्लैमर
यहाँ बिखरे पड़े हैं
वाहवाही पाने की
लूट मची है
सभी के बदन पर
मात्र परिधान नहीं
मानो कस्तूरी मृग की खाल
है
नख से शिख तक
मोती–मणियों से
सजी अप्सराओं सी
सबकी खाल है
मुखौटों से छिपी हुई हैं
अंदर का रुदन
अंदर की ख़ामोशी
आत्मा का क्रंदन

झूठी मुस्कुराहटों का
सहारा लेते–लेते
सभी का बुरा हाल है
बाहर की कृत्रिम रोशनी से
भीतर के अंधेरों का भी
बुरा हाल है
यहाँ ख़ामोशी का शोर है
या शोर में ख़ामोशी
इसे सोचने का भी
कहाँ किसको ख्याल है।

झूठा ढिंढोरा

हमने बिगुल उठाया
खूब बजाया
ढोल पीटा
शोर मचाकर कहा
माटी का स्वाद हमने चखा है
संस्कृति को हमने बचाया है
क्रांतियाँ हमने लायी हैं
जहाँ बीज भी नहीं थे
हमने अनाज बोये
हमने फसल काटे
जो भटक रहे थे
उन्हें राह दिखाया
विकास क्या होता है
यह देश को बताया

उसने कहा
तुम्हारे पैरों पर बिवाइयाँ नहीं
है
हाथों में छाले नहीं हैं
तुम्हारे तन पर पूरे कपड़े हैं
धोती–गमछा तुम्हारे बच्चे नहीं
जानते
तुमने पकवानों का स्वाद चखा
है
तुम्हें डकार का स्वाद पता है
फिर कैसे
बजा सकते हो बिगुल
पीट सकते हो ढोल
कर सकते हो नृत्य
और झुठला सकते हो
हमारी बेरोजगारी
हमारी आत्महत्याएँ
हमारी शहादत को?